हालांकि, यह तर्क दिया जा सकता है कि कई प्रकार के व्यक्तित्व हैं और उनके अलग-अलग उद्देश्य हैं या वे बिना मकसद के काम करते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

उदाहरण के लिए राक्षस या विकृत लोग बिना किसी कारण दूसरों को परेशान करते हैं। ऐसा करना उनकी प्रकृति है।

जब भगवान राम ने दानव मारीच से कहा था, 'धर्म और सदाचारी व्यक्तियों और ऋषियों की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। पवित्र कर्मों और कर्मकांडों को संरक्षण देना मेरा धर्म है। आपको ऐसे लोगों और ऐसी पवित्र गतिविधियों को बाधित नहीं करना चाहिए .. '

मारीच ने उत्तर दिया था, 'धर्मपरायण लोगों और गतिविधियों को नष्ट करना मेरा कर्तव्य और धर्म है। धर्म के खिलाफ लड़ना मेरा धर्म है। आप धर्मनिष्ठ लोगों की रक्षा के अपने धर्म के साथ आगे बढ़ें, मैं अपने धर्म के साथ आगे बढ़ूंगा। मैं धर्मनिष्ठ लोगों का उत्पीड़न और उन्हें मारना जारी रखूंगा। आप मुझे मेरे धर्म के बारे में बताने वाले कौन हैं? ' आखिरकार मारीच को राम ने मार दिया।

इसी तरह दयालु लोग बिना किसी कारण दूसरों की मदद करते हैं। उनमें परोपकारी प्रवृत्ति होती है।

एक संत थे जिन्होंने एक बिच्छू को देखा था जो नदी में डूब रहा था। उन्होंने इसे बचाने के लिए उसे अपने हाथ से पकड़ने की कोशिश की। बिच्छू ने उसे डंक मार दिया और फिर से पानी के प्रवाह से दूर गया गया। संत ने

फिर बचाने की कोशिश की। बिच्छू ने फिर डंक मार दिया। संत ने कहा, 'तुम अपना काटने का काम करो, मैं अपना तुम्हारा जीवन बचाने का काम करूंगा।'

लेकिन हिंदू दर्शन कहता हैं, 'एक पागल इंसान भी बिना किसी मकसद के काम नहीं कर सकता।'
संत और भगवान अपने स्वभाव से दूसरों के लाभ के लिए काम करते हैं। 'भूर्ज पत्र सम तनु संत कृपाला।'
अर्थ - संत का शरीर एक पत्ता होता है (जिसे लिखने के लिए पहले के दिनों में उपयोग किया जाता था) जो दूसरों को ज्ञान प्रदान करने के लिए जीवन देता है।

विश्लेषण के द्वारा पता चलेगा कि राक्षस अपनी क्रूर गतिविधियों के माध्यम से आनंद चाहते हैं। वे दूसरों को संकट में देखने का आनंद लेते हैं। जब वे दूसरों को सुखी देखते हैं या दूसरों की प्रशंसा के शब्द सुनते हैं, तो उन्हें लगता है कि उनकी सांस अटक रही है और जब दूसरों को पीड़ा होती है, तो उन्हें लगता है जैसे वे स्वर्ग में है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

संत और ईश्वर जो ईश्वरीय सुख से परिपूर्ण होते हैं, दूसरों को खुश करने में खुशी प्राप्त करते हैं।

आत्महत्या उस जीवन को समाप्त करने के लिए की जाती हैं जो संकट से भरा है और जब व्यक्ति जो मांगता है उसे पाने की उम्मीद खो देता है। दुःख को कम करने के लिए आत्महत्या की जाती हैं। हालाँकि, आत्महत्या सबसे बड़ा पाप है और इसलिए आत्महत्या करने वाला अंततः अधिक कष्ट को आमंत्रित करता है।

आत्मघाती हमलावरों को लगता है कि वे जन्नत जाएंगे लेकिन वास्तव में उन्हें नरक मिल सकता है।

अतः चींटी और राजा से लेकर राक्षस एव संतों तक, हर कोई सुख के पीछे है। यह आत्मा का स्वभाव है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132